Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

पुराणों में गंगा का महत्त्व

डॉ.बी बी त्रिपाठी
शोध निर्देशक, राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

गौरी
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, नेहरू महाविद्यालय ललितपुर बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (उत्तर प्रदेश)

Article Info
Volume 4 Issue 6
Page Number: 17-22

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Accepted : 01 Dec 2021
Published : 10 Dec 2021

सारांश – ब्रह्मपुराण में भी गंगा अलौकिक षक्ति के रूप में प्रतिश्ठित हुई है। पुराण साहित्य ही हमें गंगा के प्रति अगाध, श्रृद्धा, प्रेम, विष्वास, समर्पण की ओर इंगित करते हैं। समस्त षुभ कार्यों के प्रारम्भ में गंगा जल की प्रधानता मानी गई है तथा अन्त में मृत्यु षय्या पर पड़ा मनुश्य भी एक बूँद गंगा जल का पान करके अपने को कृत–कृत्य समझता है तथा अन्त में अस्थियाँ गंगा जी में प्रवाहित इसलिए की जाती हैं कि उस जीव को स्वर्ग प्राप्ति हो, यही हमारी सनातन परम्परा है और यही पुराणोक्तत है।

मुख्य शब्द – पुराण, गंगा, संस्कृत, साहित्य, अगाध, श्रृद्धा, प्रेम, विष्वास, समर्पण।

भारतीय महर्षियों ने गंगा को माता का स्थान प्रदान किया है। गंगा के साथ हमारी आस्था भी जुड़ी हुई है। वेदों एवं उपनिषदों में गंगा की स्तुति अनेक ऋषि–मुनियों ने की है। इसी क्रम में वेद एवं उपनिषदों के अनुसार ही पुराणों में भी गंगा का विशद उल्लेख हुआ है।

किं वाऽकरिष्यन्भववर्तिनो जाना,
नानाघसंधाभिभवाच्च दु:खिता:।
न चाऽऽगमिष्यद्भवती भुवं चे–
त्पुण्योदके गौतमि शंभुकान्ते।। ९
को वेत्ति भाग्यं नरदेहभाजां,
महीगतानां सरितामधीशे।
एषां महापातक संघहन्त्री,
त्वमम्बगंगे सुलभा सदैव ।। १०
न ते विभूतिं ननु वेत्ति कोऽपि,
त्रैलोक्यवन्धै जगदम्ब गंगे।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

गौरी समलिङ्तविग्रहोऽपि,
धत्ते स्मरारि: शिरसाऽपि यत्त्वाम्॥११

अर्थात् औषधियाँ गंगा से कहती हैं कि माँ। हमें अब क्या करना चाहिए जिससे कि हमें पति प्राप्त हो जाए क्योंकि हम बड़ी दु:खी हो गई है। हे शम्भू कान्ते! आप तो सम्पूर्ण पापराशि को समाप्त करने वाली हैं। अत: हे गंगे! हमें मार्ग बताइए जिससे हमें शीघ्र पति प्राप्त हो जाए।

इस प्रकार की स्तुति को सुनकर गंगाजी औषधियों पर प्रसन्न हो गईं और वरदान देते हुए यह घोषणा कर दी —

अहं चामृतरूपाऽस्मि, औषध्यो मातरोऽमृता: ।
तादृशं चामृतात्मानं, पतिं सोमं ददामि व: ।। २२

अर्थात् मैं औषधियों में अमृत रूप हूँ और तुम्हारी माँ हूँ इसलिए मैं आज तुम्हें पति के रूप में सोम को प्रदान कर रही हूँ।

गंगा जल सिर्फ जल ही नहीं है बल्कि यह एक औषधि है। ब्रह्मपुराण में गंगा को साक्षात् औषधि कहा गया है। एक बार सोम नामक तीर्थ में औषधियों ने ब्रह्मा जी से पूछा कि हम सभी अपने रोगों को कैसे शमन करेंगी तथा हमारा पति कौन होगा? जिससे हमारी वंशवृद्धि हो सके। तब ब्रह्मा जी ने उन सभी औषधियों को बताया कि तुम गंगा नदी में जाओ उसके संसर्ग से तुम्हारी वंश वृद्धि होगी तथा तुम सभी फलित होगी अत: औषधियों ने जाकर गंगा जी से प्रार्थना की हे माँ! हमें पति दो।

पतिं देहि जगन्माता राजानमतितेजसम्।

इसी प्रकार ब्रह्मपुराण के गौतमी महात्म्य के ११८वें अध्याय में गंगा का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि —

विमानयुक्ता: सुरसंघजुष्त: विष्णो: पदं प्राप्य सुतप्रभावात्।
गंगा प्रभावाच्य हरेश्च शंभोर्विधातुरर्कामुत तुल्यतेज:।।
सा संगता पूर्व मयापति तं गंगा सुराणामपि वन्दनीया।
देवैश्च सर्वैऽनुगम्यमाना संस्तूयमाना मुनिभिर्मरूद्भि:।।

अर्थात् गंगा के प्रभाव से ब्रह्मा, विष्णु, महेश सूर्य के समान तेजस्वी हो जाते हैं अर्थात् गंगा की शक्ति ही उन्हें तेज प्रदान करती है। गंगा के सान्निध्य को प्राप्त करने से जीव देवतुल्य हो जाता है। गंगा देवताओं में भी पूज्यनीय है, मुनियों में वन्दनीय हैं। पद्मपुराण में गंगा को सर्वोत्तम नदी बताते हुए कहा गया है कि विष्णु जिस प्रकार देवों में, अश्वमेध यज्ञ यज्ञों में, पीपल वृक्षों में श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार, नदियों में गंगा सर्वश्रेष्ठ है—

वेदानां प्रवरो विष्णुर्यज्ञानां अश्वमेधक:।
अश्वत्थ: सर्ववृक्षाणां नदी भगीरथी सदा।। २

पद्मपुराण में भी गंगा को पूज्य पवित्र एवं पापनाशिनी कहा गया है।

गंगा के प्रभाव से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं—
तथा गंगा प्रभावेण विलयं याति पातकम्।
मान्येयं सर्वदा लोके पवित्रा पापनाशिनी।। ३

स्कन्दपुराण में गंगा को लोक और परलोक को सिद्ध करने वाली कहा गया है। यह गंगा संसार का कल्याण करने वाली और मनुष्य को भावनानुरूप फल प्रदान करती है—

गंगा हि सर्वभूतानामिग्हामुत्र फलप्रदा।
भावानुरूपतो विष्णो सदा सर्वजगद्धिता।।४

पद्मपुराण में कहा गया है कि गंगा के निर्मल जल में स्नान से होने वाली प्रसन्नता की अनुभूति सैकड़ों यज्ञों से भी प्राप्त नहीं होती है।

स्नातानां यत्र पयसि गांगेय नियतात्मनाम्।
तुष्टिर्भवति या पुंसां न सा क्रतुशतैरपि।। १

पद्मपुराण में गंगा के प्रभाव का वर्णन किया गया है कि सौ योजन दूर से भी गंगा का नाम स्मरण करने से मनुष्य सारे पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक को प्राप्त करता है—

गंगा ग²sति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।२

स्कन्दपुराण में गंगा के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है गंगा जल के स्पर्श से समस्त दोष उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार अग्नि के स्पर्श से रूई नष्ट हो जाती है—

तूलशैलः स्फुलिंगेन यथा नश्यति तत्क्षणात्।
तथा दोषाः प्रणश्यन्ति गंगाम् स्पर्शनाद् ध्रुवम्।।३

स्कन्दपुराण में कहा गया है कि कलियुग में केवल गंगा ही पुण्यजनक है —

कृते तु सर्वतीर्थानि, त्रेतायां पुष्करं परम्।
द्वापरे तु कुरूक्षेत्रं, कलौ गंगेव केवलम्।।४

नारद पुराण में भी गंगा की महिमा का वर्णन किया गया है—

नास्ति गंगा समं तीर्थं नास्ति मातृसमो गुरूः।५

अर्थात् गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं है और माँ के समान कोई गुरू नहीं है। नारद पुराण में हरिद्वार क्षेत्र के तीर्थों का विशेष वर्णन मिलता है। गंगा तीर्थों में केवल तीन ही तीर्थों की गणना की गई है—

हरिद्वारे प्रयागे च गंगा — सागर — संगमे।
स्नात्वैव ब्रह्मणो विष्णोः शिवस्य च पुरं व्रजेत्।।१

हरिद्वार, प्रयाग तथा गंगासागर इन तीनों तीर्थों में क्रमशः ब्रह्मलोक, विष्णुलोक और शिवलोक की प्राप्ति होती है।

नारद पुराण की भाँति श्रीमद्भागवत् पुराण के नवम् स्कन्ध के ९वें अध्याय में गंगावतरण की गरिमा गाथा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि —

न इ्ढोतत् परमाश्चर्यं, स्वर्धुन्या यदि डढोदितम्।
अनन्त चरणाम्भोज प्रसूताया भवच्छिदः ।।२

अर्थात् इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि गंगाजी भगवान विष्णु के चरणों से निकली है। इसके सेवन से बड़े—बड़े ऋषि—मुनियों के मन निर्मल हो जाते हैं और तीनों गुणों के कठिन बन्धन को काटकर भगवतत्स्वरूप हो जाते हैं।

श्रीमद्भागवत् में गंगा अति पवित्र देवस्वरूपा, भुक्ति मुक्ति दायिनी है और अनेक पापकर्मों में लिप्त जीवात्मा यदि गंगा जी के दर्शन, स्पर्श, पान करे तो वह भी शीघ्र पापों से मुक्त होकर स्वर्ग चला जाता है।

शिव पुराण के अनुसार गंगा का प्राकट्य गंगा सप्तमी को माना जाता है। जैसा कि—

गंगापि प्रतिवर्षं तद्दिने याति शुभेच्छया,
क्षालनार्थं स्वपापस्य यद्गृहीतं ऋणां द्विजा।।
तत्र स्नातो नरः सत्यक नंदिकेशं समर्च्य यः,
ब्रह्महत्यादिभिः पापे मुच्यते ह्यखिलैरपि।।३

गंगा प्रतिवर्ष उस दिन से अब तक पापियों के पाप का प्रक्षालन करती है। जो जीव शंकर की अर्चना, पूजा कर गंगाजी में स्नान करता है, वह ब्रह्म हत्या से मुक्त होकर स्वर्ग को प्राप्त हो जाता है। शिवपुराण में गंगोत्पत्ति शंकर की कृपा एवं साक्षात् शिवांश स्वरूप माना गया है। यहाँ पर गंगा को सामुज्य मुक्तिदात्री एवं ब्रह्महत्यादि पापों से मुक्ति दिलाने का श्रेय गंगा को ही दिया है। गंगा को पाप का नाश करने वाली और मोक्षदायिनी बताया गया है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण में गंगोत्पत्ति कथन में कृष्ण भगवान कहते हैं कि गंगा की उत्पत्ति देवताओं के शरीर से हुई है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में गंगा की गरिमा गाथा का वर्णन करते हुए कहा गया है—

यस्याश्च स्पर्शवायोश्च संपर्केण विनश्यति।
किं वा न जाने प्राणेशि स्पर्शदर्शनयोःफलम्।।१

अर्थात् गंगा के स्पर्श करने से या वायु के सम्पर्क मात्र से पापराशि समाप्त हो जाती है। हे प्राणवल्लभे! जल स्पर्श और वायु के सम्पर्क से व्यक्ति पापमुक्त हो जाता है तो गंगा के स्पर्श और दर्शन मात्र से पता नहीं क्या होगा, अर्थात् निःसन्देह मुक्ति या मोक्ष प्राप्त होता है।

इसी प्रकार अग्नि पुराण में भी गंगा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि—

गतिर्गंगा तु भूतानां, गतिमन्वेषतां सदा।
गंगा वारयते चोभौ वंशौ नित्यं हि सेविता।।२

अर्थात् समस्त प्राणियों की एकमात्र गति गंगा ही है जिसका सेवन करना चाहिए। गंगा दोनों कुलों (मातृपक्ष एवं पितृपक्ष) का उद्धार कर देती है, अर्थात् एक वैदिक के गंगा दर्शन एवं स्नान मात्र करने से उसके पितृगण स्वर्गलोक को प्राप्त हो जाते हैं।

स्कन्द पुराण में गंगा को साक्षात् ऋग्वेद की मूर्ति मानते हुए कहा गया है कि —

ऋग्वेदमूर्तिगंगा स्याद्यमुनाचयर्जुध्रुवम्।
नर्मदा साममूर्तिस्तु तस्याऽभर्वा सरस्वती।।

वराह पुराण के अध्याय ८४ के चौथे श्लोक में गंगा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि भगवती गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू, नर्मदा, गोदावरी, सिन्धु तथा कावेरी आदि नदियों की असीम महिमा है। इनके स्मरण, कीर्तन, अवगाहन, दर्शन, जलपान तथा इनके तट पर किए गए सन्ध्या, तर्पण, दान, श्राद्ध, यज्ञादि से त्रिवर्ग के साथ मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

वामन पुराण के अनुसार ३४वें अध्याय के तीर्थवर्णन में गंगा को महान पुण्य देने वाली एवं सम्पूर्ण पापों को समाप्त करने वाली गंगा का स्तुवन करते हुए कहा गया है कि—

आपगाच महापुण्या गंगा मन्दाकिनी नदी मधुश्रवनम्।।२

वामन पुराण की भाँति कूर्मपुराण में भी गंगा तीर्थ समस्त कल्मषों को दूर करती हुई जीवात्मा को मुक्ति प्रदान करती है। कहा भी गया है कि —

यत्र गंगा महाभागा बहुतीर्थ तपोवना।

सिद्धक्षेत्रं हि तज्ज्ञेयं नात्र कार्या विचारणा।।
क्षितौ तारयते मर्त्या नागास्तारयतेऽप्यधः।
दिवितारयते देवांस्तेन सा त्रिपथा स्मृता।।३

कलियुग में गंगा का महत्त्व बताते हुए कहा गया है कि—

कृते नैमिषं तीर्थं त्रेतायां पुष्करं वरम्।
द्वापरे तु कुरूक्षेत्रं कलौ गंगा विशिष्यते।।४

अर्थात् सतयुग में नैमिषारण्य तीर्थ माना जाता था और त्रेता में पुष्कर, द्वापर में कुरूक्षेत्र एवं कलियुग में गंगा। गंगा समस्त तीर्थों में प्रधान तीर्थ सिद्ध क्षेत्र व तपोवन के समान है। देव, मनुष्य, नाग सब की आधार स्तम्भ गंगा ही है। जो महान् दुष्कर्म करने वालों को भी मुक्ति प्रदान करती है।

कल्कि पुराण में गंगा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि—

स एव पुरूषोत्तमः स्मरति साधु मन्दाकिनीं।
स एव विजयी प्रभुः सुरतरङ्गिणीं सेवते।।५

गंगा हमारी अधिष्ठात्री देवी के रूप में अनादिकाल से चली आ रही है जिसका वन्दन, पूजन, स्नान पान करने से मनुष्य को आन्तरिक व वाहृय आनन्द की अनुभूति होती है। ब्रह्मपुराण में भी गंगा अलौकिक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हुई है। पुराण साहित्य ही हमें गंगा के प्रति अगाध, श्रृद्धा, प्रेम, विश्वास, समर्पण की ओर इंगित करते हैं। समस्त शुभ कार्यों के प्रारम्भ में गंगा जल की प्रधानता मानी गई है तथा अन्त में मृत्यु शय्या पर पड़ा मनुष्य भी एक बूँद गंगा जल का पान करके अपने को कृत—कृत्य समझता है तथा अन्त में अस्थियाँ गंगा जी में प्रवाहित इसलिए की जाती हैं कि उस जीव को स्वर्ग प्राप्ति हो, यही हमारी सनातन परम्परा है और यही पुराणोक्त्त है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. ब्रह्मपुराण—११९/९—११
२. ब्रह्मपुराण—९५०/१६
३. ब्रह्मपुराण—४९/१४
४. पद्मपुराण उ०— ४२.४२
५. पद्मपुराण उ०—२३.९
६. स्कन्दपुराणकाशी—२७.२३
७. पद्मपुराण उ० ८१.३६
८. पद्मपुराण उ० ८१.३६
९. स्कन्दपुराण उ०— २७.६२
१०. स्कन्दपुराण काशी
११. नारद पुराण— ६/५०
१२. भागवत पुराण— ९/९/१४
१३. ब्रह्मपुराण— ३४/१८
१४. अग्नि पुराण—११०/२

१५. स्कन्द पुराण काशी खण्ड—९१/७
१६. वामन पुराण—३४ तीर्थ वर्णन
१७. कूर्मपुराण — ३७
१८. कूर्मपुराण—३७—३७
१९. कूर्म पुराण—९